विद्यालय नेतृत्व और प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम के विस्तारित संपर्क कार्यक्रम का मूल्यांकन

शाइनी दुग्गल*

समाज तथा तकनीकी क्षेत्र में अभूतपूर्व गति से परिवर्तन होने के कारण शिक्षकों के लिए चुनौतीपूर्ण स्थिति उत्पन्न हो गई है। ऐसी चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों का सामना करने के लिए शिक्षकों का सेवा-पूर्व प्रशिक्षण/शिक्षा अपर्याप्त है। ऐसे में परिवेश की गतिशीलता के कारण शिक्षकों को सेवारत प्रशिक्षण/शिक्षा द्वारा अनवरत क्षमता अभिवर्धन करना आवश्यक है। इसी आवश्यकता का ध्यान रखते हुए, इग्नू के शिक्षा विद्यापीठ द्वारा वर्ष 2008 में, विशेष रूप से सेवारत शिक्षकों, प्राचार्यों/प्रधानाध्यापकों तथा भावी प्रधानाध्यापकों के लिए, विद्यालय नेतृत्व और प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (पी.जी.डी.एस.एल.एम.) कार्यक्रम शुरू किया गया। इस डिप्लोमा कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य, विद्यालय में प्रभावी तथा अनुकूल परिवेश सृजित कर, विद्यालय के विभिन्न कार्यों के निष्पादन की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए, शिक्षकों में अनिवार्य कौशल, क्षमताओं तथा मूल्यों का विकास करना है। इग्नू के इस डिप्लोमा कार्यक्रम का एक महत्वपूर्ण घटक — विस्तारित संपर्क कार्यक्रम (ई.सी.पी.) है, जिसकी उपयोगिता को ज्ञात करने का प्रयास एक शोध अध्ययन द्वारा किया गया। शोध अध्ययन में पाया गया कि पी.जी.डी.एस.एल.एम. कार्यक्रम के ई.सी.पी. के अधिकांश प्रतिभागियों ने अपेक्षित विभिन्न क्षमताओं, कौशलों तथा मूल्यों के विकास के लिए बहुत उपयोगी माना अर्थात् यह शोध पत्र पी.जी.डी.एस.एम. कार्यक्रम के ई.सी.पी. की प्रभावशीलता को उल्लेखित करता है।

राष्ट्र के विकास में शिक्षक वर्ग की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। शिक्षक ही भावी पीढ़ी को अपेक्षित रूप से विकसित कर, उसे मूल्यवान मानव संसाधन के रूप में परिवर्तित करता है। एक जागरूक शिक्षक प्रतिकूल, अनपेक्षित तथा अप्रत्याशित परिस्थितियों में भी समाज को प्रभावी नेतृत्व दे सकता है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में, समाज तथा तकनीक के क्षेत्र में अभूतपूर्व रूप से तथा तेज़ी से परिवर्तन हो रहे हैं, जो शिक्षकों के लिए सतत चुनौतीपूर्ण स्थिति उत्पन्न कर रहे हैं। ऐसी चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों का सामना करने के लिए शिक्षकों का सेवा-पूर्व प्रशिक्षण/शिक्षा अपर्याप्त है। परिवेश की यही गतिशीलता, शिक्षकों के सेवारत प्रशिक्षण/शिक्षा द्वारा उनके अनवरत क्षमता अभिवर्धन का एक मुख्य आधार है। अध्यापक शिक्षा में अनवरत क्षमता अभिवर्धन ऐच्छिक न होकर, अनिवार्यता के स्तर पर अपेक्षित है। इसी अनिवार्यता के फलस्वरूप ही, समय-समय पर भारत सरकार के विभिन्न

* *सहायक क्षेत्रीय निदेशक*, इग्नू क्षेत्रीय केंद्र दिल्ली-1, नयी दिल्ली 110044

© NCERT not to be republished

आयोगों, नीतियों तथा समितियों आदि द्वारा सेवारत अध्यापक शिक्षा के महत्व पर बल दिया जाता रहा है। 'शिक्षा आयोग' (1966), *'राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986,* 'प्रोग्राम ऑफ़ एक्शन' (1992), *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*, अध्यापक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2009) आदि ने शिक्षकों की क्षमता अभिवर्धन तथा कौशल विकास के लिए सेवारत प्रशिक्षण/शिक्षा को महत्वपूर्ण माना है। इसके अतिरिक्त, कुमार तथा साहू (2018), लोढ़ा (2018), चमोला (2018) आदि ने भी शिक्षकों के सतत व्यावसायिक विकास की आवश्यकता के महत्व को अनुमोदित किया है। लोढ़ा (2018) ने व्यावसायिक विकास के विविध पक्षों की विवेचना करते हुए इसे शिक्षकों के लिए अनवरत महत्वगामी प्रक्रम माना है। चमोला (2018) ने शिक्षकों के व्यावसायिक विकास का दायित्व दोनों — संबंधित प्रबंधक संस्थानों तथा स्वयं शिक्षकों को दिया है। अत: सेवारत शिक्षकों का सतत क्षमता अभिवर्धन तथा कौशल विकास, न केवल महत्वपूर्ण है, बल्कि अनिवार्य भी है। इसी महत्ता को ध्यान में रखते हुए, इग्नू के शिक्षा विद्यापीठ द्वारा वर्ष 2008 में, विशेष रूप से सेवारत शिक्षकों, प्रमुख शिक्षकों तथा भावी मुख्याध्यापकों के लिए, विद्यालय नेतृत्व और प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन स्कूल लीडरशिप एंड मैनेजमेंट — पी.जी.डी.एस.एल.एम.) शुरू किया गया। इस डिप्लोमा का मुख्य उद्देश्य, विद्यालय में प्रभावी तथा अनुकूल परिवेश सृजित कर, विद्यालय के विभिन्न कार्य निष्पादन की गुणवता को बढ़ाने के लिए, शिक्षकों में अनिवार्य कौशल, क्षमताओं तथा मूल्यों का विकास करना है। इसके पाँच सैद्धांतिक घटक (कोर्स) हैं। इसके अतिरिक्त, इस डिप्लोमा कार्यक्रम का एक विशिष्ट घटक — विस्तारित संपर्क कार्यक्रम (एक्सटेंडिड कॉन्टैक्ट प्रोग्राम— ई.सी.पी.) है, जो कि चार दिन का, एक गैर-क्रेडिट अनिवार्य घटक है। इग्नू में प्राय: संपर्क कार्यक्रम अनिवार्य नहीं होते, परंतु यह ई.सी.पी. एक अपवाद है। यद्यपि इस डिप्लोमा में इग्नू में प्रतिवर्ष, दो सत्रों— जनवरी तथा जुलाई सत्र में प्रवेश दिया जाता है तथापि, यह डिप्लोमा विशेषकर सेवारत शिक्षक वर्ग के लिए होने के कारण, इस कार्यक्रम की ई.सी.पी. का आयोजन वर्ष में केवल एक बार प्राय: मई के महीने में ही होता है, जब अधिकतर प्रतिभागियों के विद्यालयों में ग्रीष्मावकाश होते हैं। ई.सी.पी. के दौरान, प्रतिभागियों को लगातार चार दिन तक, डिप्लोमा के सैद्धांतिक घटकों पर आधारित, विभिन्न विषयों तथा प्रकरणों पर अध्यापक-शिक्षकों के साथ अंतर्क्रिया करने का अवसर दिया जाता है। पहले इस ई.सी.पी. में टेलीकॉन्फ्रेंसिंग की व्यवस्था भी थी, जिसके द्वारा देश भर के प्रतिभागी इग्नू मुख्यालय में उपस्थित शिक्षा विद्यापीठ के अध्यापक-शिक्षकों के साथ सीधे अंतर्क्रिया कर सकते थे, परंतु 2013 के पश्चात् इसे केवल क्षेत्रीय केंद्र में उपस्थित व आमंत्रित अध्यापक-शिक्षकों के साथ आमने-सामने अंतर्क्रिया तक सीमित कर दिया गया। चूँकि ई.सी.पी. का उद्देश्य भी प्रतिभागियों में आवश्यक कौशल, क्षमताएँ तथा मूल्यों का विकास कर, विद्यालय को प्रभावी नेतृत्व देने के लिए सक्षम बनाना है, इसलिए इसमें अनेक शिक्षण विधियों, जैसे — व्याख्यान, परिचर्या, विचार-विमर्श, व्यक्तिगत तथा सामूहिक गतिविधियाँ आदि को सम्मिलित किया गया है। इस ई.सी.पी. के घटक को पूरा करने के पश्चात् ही

© NCERT not to be republished

प्रतिभागी डिप्लोमा प्राप्त कर सकते हैं। इग्नू द्वारा परिकल्पनित इसी महत्वपूर्ण घटक—ई.सी.पी. की उपयोगिता को जानने का प्रयास इस शोध कार्य द्वारा किया गया है।

शोध की आवश्यकता

प्रतिवर्ष इग्नू के पी.जी.डी.एस.एल.एम. कार्यक्रम में लगभग 300–400 विद्यार्थी प्रवेश लेते हैं, जिन्हें ई.सी.पी. घटक को अनिवार्य रूप से संपन्न करना होता है। इग्नू द्वारा इस घटक को अनिवार्य बनाना, इसके महत्व को दर्शाता है, परंतु यह घटक प्रतिभागियों के लिए कितना उपयोगी है, यह जानना आवश्यक हो जाता है। अत: प्रस्तुत शोध में ई.सी.पी. के विभिन्न आयामों पर प्रतिभागियों के अवबोधन को जानने का प्रयास किया गया है।

समस्या कथन

विद्यालय नेतृत्व तथा प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम की ई.सी.पी. की उपयोगिता के संदर्भ में ई.सी.पी. के प्रतिभागियों का अवबोधन।

संक्रियात्मक परिभाषाएँ

- शोध कार्य में प्रतिभागी शब्द का प्रयोग उन विद्यार्थियों के लिए किया गया है जिन्होंने विद्यालय नेतृत्व तथा प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा में प्रवेश लेकर, इग्नू के विभिन्न क्षेत्रीय केंद्रों द्वारा आयोजित ई.सी.पी. में भाग लिया।
- अवबोधन ई.सी.पी. के प्रभावक होने के परिक्षेप पर प्रतिभागियों के विचार हैं।

शोध के उद्देश्य

- ई. सी. पी. की उपयोगिता के संदर्भ में प्रतिभागियों का अवबोधन का आकलन करना।
- ई. सी. पी. के आयोजन के संदर्भ में प्रतिभागियों के विचार जानना।
- ई. सी. पी. को बेहतर बनाने के लिए प्रतिभागियों से सुझाव प्राप्त करना।

शोध का प्रारूप

इस शोध अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

शोध की जनसंख्या और न्यादर्श

इग्नू में 2008 से लेकर वर्तमान तक जितने भी प्रतिभागियों (विद्यार्थियों) ने पी.जी.डी.एस. एल.एम. कार्यक्रम के ई.सी.पी. में भाग लिया, वे सभी शोध की जनसंख्या के अंतर्गत आते हैं। वर्तमान शोध के लिए न्यादर्श का चयन 'उद्देश्यपूर्ण न्यादर्श विधि' के आधार पर उन प्रतिभागियों को सम्मिलित करके किया गया, जिन्होंने इग्नू के क्षेत्रीय केंद्र दिल्ली-1 द्वारा, 2015 से 2018 तक आयोजित ई.सी.पी. में भाग लिया। इनमें कुछ प्रतिभागी निकटवर्ती क्षेत्रीय केंद्रों जैसे कि क्षेत्रीय केंद्र दिल्ली-3, क्षेत्रीय केंद्र नोएडा, क्षेत्रीय केंद्र करनाल आदि के भी सम्मिलित थे जो किसी कारणवश अपने क्षेत्रीय केंद्र में ई.सी.पी. का घटक प्रतिपूर्ण नहीं कर सके थे। वस्तुत: प्रस्तुत शोध के लिए निम्नलिखित चयनित प्रतिभागियों को न्यादर्श में समाविष्ट किया गया—

वर्ष	महिलाएँ	पुरुष	कुल
2015	23	19	42
2016	34	27	61
2017	30	20	50
2018	28	22	50

© NCERT not to be republished

उपकरण

विस्तारित संपर्क कार्यक्रम के संदर्भ में प्रतिभागियों के अवबोधन को जानने के लिए मुख्यत: प्रतिभागियों के लिए प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। इसके अतिरिक्त, शोधक द्वारा सभी चयनित ई.सी.पी. में स्वयं प्रस्तुत/उपस्थित होने के कारण, आँकड़ों को परिपूर्णता देने हेतु, सहभागी प्रेक्षण सूची तथा केंद्रित समूह परिचर्चा जैसे उपकरणों का भी प्रयोग किया गया। उपकरणों के मुख्यत: दो पक्ष थे — अकादमिक पक्ष तथा आयोजन पक्ष।

आँकड़ों का विश्लेषण

इस शोध कार्य में आँकड़ों का गुणात्मक विश्लेषण किया गया।

परिसीमन

शोध को इग्नू के क्षेत्रीय केंद्र दिल्ली-1 द्वारा, पी.जी.डी.एस.एल.एम. कार्यक्रम की 2015, 2016, 2017 तथा 2018 में आयोजित ई.सी.पी. तक ही परिसीमित किया गया।

परिणाम तथा विश्लेषण

इस शोध में सम्मिलित आँकड़ों के विश्लेषण के लिए आँकड़ों का प्रस्तुतीकरण मुख्यत: वर्षों के आधार पर किया गया है। यहाँ यह बताना भी आवश्यक है कि प्रथम दो समूह अर्थात् वर्ष 2015 तथा 2016 में ई.सी.पी. का आयोजन सीमित सुविधाओं वाले क्षेत्रीय केंद्र दिल्ली-1 के परिसर में किया गया, जहाँ विभिन्न सत्रों में, अधिकांशत: बाह्य संसाधन व्यक्तियों (अन्य विश्वविद्यालयों अथवा महाविद्यालय से संबंधित) को अवसर दिया गया था। इसके विपरीत, अंतिम दो समूहों अर्थात् 2017 तथा 2018 में ई.सी.पी. का आयोजन बेहतर सुविधाओं वाले इग्नू मुख्यालय के परिसर में किया गया, जहाँ मुख्यत: इग्नू के शिक्षा विद्यापीठ के अध्यापक-प्राध्यापकों को ही संसाधन व्यक्तियों के रूप में सम्मिलित किया गया। अत: प्रस्तुत शोध में, इन चार समूहों, 2015, 2016, 2017 तथा 2018 के प्रतिभागियों के ई.सी.पी. के कुछ आयामों के संदर्भ में, उनके विचारों का तुलनात्मक विश्लेषण भी किया गया है।

अकादमिक पक्ष

अकादमिक पक्ष के विश्लेषण के लिए, ई.सी.पी. के निश्चित समय की सारणी को आधार बनाया गया, जिसे पूरे देश में समरूपता बनाए रखने के लिए, इग्नू के शिक्षा विद्यापीठ द्वारा बनाया जाता है। इसमें उल्लिखित प्रकरणों पर प्रतिभागियों के विचार तालिका 1 में दिए गए हैं।

तालिका 1 — प्रतिभागियों का विभिन्न प्रकरणों की उपयोगिता के संदर्भ में अवबोधन

क्रमांक	प्रकरण	अति उपयोगी		उपयोगी		अनुपयोगी	
		संख्या	*प्रतिशत*	*संख्या*	*प्रतिशत*	*संख्या*	*प्रतिशत*
1.	संघर्ष प्रबंधन	140	69%	50	25%	13	6%
2.	अनुदेशात्मक नेतृत्व	103	51%	68	33%	32	16%
3.	कक्षा-कक्ष प्रबंधन	165	81%	28	14%	10	5%
4.	शिक्षण विधियाँ	180	89%	12	6%	11	5%
5.	शैक्षिक प्रौद्योगिकी	192	95%	7	3%	04	2%
6.	अंतर्वैयक्तिक संबंध	96	47%	61	30%	46	23%

© NCERT not to be republished

7.	विद्यालय विकास योजना	115	57%	32	16%	56	28%
8.	भूमिका संबंधी तनाव का प्रबंधन	88	43%	65	32%	50	25%
9.	वित्तीय कार्यनीतियाँ	117	58%	47	23%	39	19%
10.	विद्यालयों की सामाजिक निकायों से साझेदारी	122	60%	43	21%	38	19%
11.	बजट निर्माण	135	67%	27	13%	41	20%
12.	विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता	144	71%	36	18%	23	11%
13.	मूल्यांकन	179	88%	13	6%	11	5%
14.	समावेशी विद्यालय	152	75%	27	13%	24	12%
15.	बहु-सांस्कृतिक तथा बहुवादी विद्यालय	136	67%	30	15%	37	18%

विवेचना

अधिकांश प्रतिभागियों ने अधिकतर प्रकरणों को अति उपयोगी अथवा उपयोगी माना। शिक्षा प्रौद्योगिकी, मूल्यांकन, शिक्षण विधियाँ तथा कक्षा-कक्ष प्रबंधन जैसे प्रकरणों को प्रतिभागियों ने विशेष रूप से अति उपयोगी पाया। इसके विपरीत, कुछ प्रकरणों, जैसे— अनुदेशात्मक नेतृत्व, अंतर्वैयक्तिक संबंध, विद्यालय विकास योजना, भूमिका संबंधी तनाव प्रबंधन, बजट निर्माण, वित्तीय कार्यनीतियाँ, सामाजिक निकायों से साझेदारी, बहु-सांस्कृतिक तथा बहुवादी विद्यालय जैसे प्रबंधन-संबंधी प्रकरणों को कुछ प्रतिभागियों ने अनुपयोगी माना। अर्थात् कुछ प्रतिभागियों ने कक्षा-कक्ष-केंद्रित प्रकरणों की तुलना में प्रबंधन-संबंधी प्रकरणों को कम उपयोगी माना, जो उनके मतानुसार, तुलनात्मक रूप से विद्यालय में उनके दैनिक कार्यों के लिए कम प्रासंगिक थे।

- तालिका 2 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि अधिकतर प्रतिभागी ई.सी.पी. में प्रकरण-चयन से संबंधित विभिन्न आयामों— क्रम, निर्धारित समय, व्यापकता, प्रासंगिकता तथा उपयुक्तता से अति संतुष्ट अथवा संतुष्ट पाए गए। हालाँकि 2015, 2017 और 2018 की तुलना में 2016 में असंतुष्ट प्रतिभागियों का प्रतिशत अधिक था, जिसका मुख्य कारण निश्चित समय पर संसाधन व्यक्तियों की अनुपलब्धता था।
- शोध के प्रथम दो समूहों अर्थात् 2015 तथा 2016 के प्रतिभागियों के लिए, अधिकतर बाह्य संसाधन व्यक्ति (अन्य विश्वविद्यालयों अथवा महाविद्यालयों से संबंधित) को अवसर दिया गया। दूसरी ओर, शोध के अंतिम दो समूहों अर्थात् 2017 तथा 2018 के प्रतिभागियों के लिए, संसाधन व्यक्ति पूर्णत: इग्नू विश्वविद्यालय से ही लिए गए। सम्मिलित आँकड़ों के आकलन से यह स्पष्ट होता है कि इग्नू के संसाधन व्यक्तियों द्वारा लिए गए सत्र अधिक उपयोगी पाए गए। इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि इग्नू के संसाधन व्यक्तियों ने ई.सी.पी. के उद्देश्य तथा उपागम को व्यापक तौर पर प्रकरण में समष्टि रूप से नियोजित कर संपादित किया। इसके विपरीत

© NCERT not to be republished

तालिका 2 — अकादमिक पक्ष पर प्रतिभागियों का वृत्तिक मूल्यांकन

अकादमिक पक्ष के आयाम	समूह 1–2015			समूह 2–2016			समूह 3–2017			समूह 4–2018		
	अति संतुष्ट	संतुष्ट	असंतुष्ट	अति संतुष्ट	संतुष्ट	असंतुष्ट	अति संतुष्ट	संतुष्ट	असंतुष्ट	अति संतुष्ट	संतुष्ट	असंतुष्ट
प्रकरण चयन												
क्रम	20	18	4	24	20	17	32	12	6	30	14	6
निर्धारित समय	22	14	6	28	21	12	36	9	5	32	11	7
व्यापकता	26	11	5	31	16	14	30	12	8	34	4	12
प्रासंगिकता	28	8	6	26	24	11	31	12	7	32	10	8
उपयुक्तता	30	8	4	28	21	12	34	9	7	35	8	7
संसाधन व्यक्ति												
विषय ज्ञान	18	12	12	28	13	20	33	13	4	36	10	4
विषय संपादन	20	11	11	27	18	16	32	12	6	34	14	2
अंतर्वैयक्तिक संबंध	22	11	9	30	18	13	30	8	12	36	11	3
शिक्षण विधि												
प्रतिभागी केंद्रित	20	12	10	32	12	17	32	10	8	35	7	8
प्रभावी	18	16	8	27	19	15	33	7	10	31	9	10
द्वि-आयामी	18	14	10	26	19	16	33	8	9	32	6	12
गतिविधि केंद्रित	19	16	7	22	24	15	34	12	4	38	7	5
अंतर्क्रिया का अवसर	23	8	11	20	24	17	30	12	8	32	12	6
लोकतांत्रिक उपागम	17	15	10	27	22	12	31	12	7	35	9	6
शिक्षा प्रौद्योगिकी												
तकनीकी उपकरण की उपलब्धता	16	14	12	26	16	19	33	8	9	36	8	6
तकनीकी प्रयोग की उपयुक्तता	18	14	10	24	21	16	31	14	5	39	6	5

बाह्य संसाधन व्यक्तियों ने केवल अपने प्रकरण को अलग से संपादित किया। प्रथम दो समूह के कुछ प्रतिभागियों ने, कुछ बाह्य संसाधन व्यक्तियों को दुबारा न बुलाने का सुझाव दिया। ताकि भावी प्रतिभागियों के समय का बेहतर सदुपयोग हो सके। इसे संज्ञान में रखते हुए अंतिम दो चरणों में बाह्य संसाधन व्यक्तियों को सम्मिलित नहीं किया गया, जिससे अंतिम दो चरणों के प्रतिभागियों की प्रतिपुष्टि रिपोर्ट से यह सिद्ध भी हुआ कि संसाधन व्यक्तियों का चयन, ई.सी.पी. की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी।

- विस्तारित संपर्क कार्यक्रम में डिप्लोमा कार्यक्रम के प्रकरण सैद्धांतिक घटकों पर आधारित होने के कारण, विषय-विनिमयन के लिए विभिन्न शिक्षण विधियाँ, जैसे — व्याख्यान, परिचर्चा, विचार-विमर्श, व्यक्तिगत तथा सामूहिक गतिविधियाँ अपनाई गईं, जिन्हें अधिकतर प्रतिभागियों ने पर्याप्त तथा उचित पाया। हालाँकि, प्रायः प्रतिभागियों की संख्या अधिक होने के कारण सभी के अनुभवों को सत्रों में समाविष्ट नहीं किया जा सका। फलतः कुछ प्रतिभागियों ने अपने ज्ञान तथा अनुभवों को साझा करने के लिए और अधिक समय दिए जाने की इच्छा प्रकट की। ई.सी.पी. में विभिन्न प्रशासनिक पृष्ठभूमि वाले, जैसे — सरकारी, गैर-सरकारी, केंद्रीय विद्यालयों आदि के शिक्षक, प्रमुख शिक्षक, मुख्याध्यापक, परामर्शदाता आदि प्रतिभागियों ने भाग लिया। इसी पृष्ठभूमि की विविधता के कारण प्रतिभागियों को एक-दूसरे से सीखने का भी अवसर प्राप्त हुआ। इसके फलस्वरूप प्रतिभागियों का आपस में तथा संसाधन व्यक्तियों के साथ अंतर्वैयक्तिक संबंधों का स्तर काफ़ी उच्च रहा। अधिकांश प्रतिभागियों के अनुसार, अधिकतर सत्रों में लोकतांत्रिक वातावरण होने के कारण वे अपने विचार बेझिझक रख पाए, जिससे वे न केवल अपनी विषय-आधारित समस्याओं, अपितु अपनी दैनिक-कार्य संबंधी समस्याओं के समाधान के भी विभिन्न विकल्प जान पाए।
- अधिकतर प्रतिभागी ई.सी.पी. में प्रयोग की गई तकनीकी सहायता से संतुष्ट थे। हालाँकि,

तालिका 3 — ई.सी.पी. के आयोजन पक्ष के संदर्भ में प्रतिभागियों के विचार

आयोजन पक्ष के आयाम	समूह 1–2015			समूह 2–2016			समूह 3–2017			समूह 4–2018		
	अति संतुष्ट	*संतुष्ट*	*असंतुष्ट*	*अति संतुष्ट*	*संतुष्ट*	*असंतुष्ट*	*अति संतुष्ट*	*संतुष्ट*	*असंतुष्ट*	*अति संतुष्ट*	*संतुष्ट*	*असंतुष्ट*
स्थान	12	18	12	18	26	17	26	18	6	30	14	6
समय (मई का महीना)	16	16	10	20	29	22	28	15	7	32	14	4
अवधि	10	20	12	17	34	10	27	12	11	35	8	7
जलपान/ अल्पाहार	17	17	8	15	30	16	24	16	10	27	17	6

© NCERT not to be republished

प्रथम दो समूहों, 2015 तथा 2016 के कुछ प्रतिभागियों ने तकनीकी सहायता के बेहतर प्रयोग की संभावना जताते हुए, उसे लगभग संतोषजनक स्तर का पाया।

- शोध कार्य में प्रतिभागियों से ई.सी.पी. आयोजन पक्ष के बारे में भी उनके विचार जानने का प्रयास किया गया। तालिका 3 में इस पक्ष पर, चारों समूहों के प्रतिभागियों से सम्मिलित आँकड़े प्रस्तुत हैं।

मूलभूत सुविधाओं का प्रतिभागियों की सक्रियता पर विशेष तौर पर प्रभाव पड़ता है। तालिका 3 के अवलोकन से स्पष्ट है कि प्रथम दो समूहों (2015 तथा 2016) की तुलना में अंतिम दो समूहों (2017 तथा 2018) के प्रतिभागी, ई.सी.पी. के आयोजन पक्ष से अधिक संतुष्ट पाए गए। मई के महीने में, तकनीकी सुविधाओं से लैस इग्नू मुख्यालय के वातानुकूलित कक्ष में, 2017 तथा 2018 में आयोजित ई.सी.पी. के प्रतिभागियों ने, क्षेत्रीय केंद्र दिल्ली-1 के सीमित सुविधाओं वाले परिसर में 2015 तथा 2016 में आयोजित ई.सी.पी. के प्रतिभागियों की तुलना में, अधिक सुखद परिवेश का अनुभव किया, जिससे उनके अकादमिक पक्ष को भी सहायता मिली। शोध के प्रथम दो समूहों अर्थात् 2015 तथा 2016 की तुलना में, अंतिम दो समूहों अर्थात् 2017 तथा 2018 के प्रतिभागियों, की सक्रियता तथा उनके और साथियों की संसाधन व्यक्तियों के साथ अंतर्क्रिया का स्तर, तुलनात्मक रूप में बेहतर तथा उच्चतर पाया गया।

प्रतिभागियों द्वारा दिए गए सुझाव

- अधिकांश प्रतिभागियों ने ई.सी.पी. को विद्यालय प्रबंधन तथा नेतृत्व के संदर्भ में एक अपूर्व तथा विशिष्ट अनुभव मानते हुए इसे भविष्य में स्वयं और साथियों को करने का सुझाव देने की बात कही।
- अधिकतर प्रतिभागियों ने यह भी माना कि जब उन्होंने ई.सी.पी. के लिए स्वयं को पंजीकृत करवाया था, तो वे यह सोचकर आए थे कि चार दिन वे ऐसे ही नैमित्तिक रूप से बिताकर चले जाएँगे, परंतु ई.सी.पी. में भाग लेकर उन्हें अपेक्षित स्तर से बहुत अधिक लाभ हुआ। अतः उन्होंने यह सुझाव दिया कि ई.सी.पी. की अवधि को बढ़ाकर 5–6 दिन कर देना चाहिए।
- विस्तारित संपर्क कार्यक्रम को अधिकांश प्रतिभागियों द्वारा अति उपयोगी मानते हुए यह सुझाव दिया गया कि इसका आयोजन प्रतिवर्ष दो बार किया जाना चाहिए ताकि इसमें भाग लेने के साथ ही प्रतिभागियों की सत्रांत परीक्षा की अच्छी तैयारी भी हो जाए।
- विस्तारित संपर्क कार्यक्रम को क्रेडिट युक्त घटक बनाकर इसमें मूल्यांकन का पक्ष भी जोड़ना चाहिए। वर्तमान में, इसमें केवल उपस्थिति की अनिवार्यता है। कुछ प्रतिभागियों के अनुसार ई.सी.पी. में प्रतिभागियों के प्रदर्शन तथा भागीदारी के स्तर को मापने की व्यवस्था भी होनी चाहिए। प्रतिभागियों के ई.सी.पी. के विभिन्न सत्रों में सक्रियता के संदर्भ में जानकारी, ई.सी.पी. के उद्देश्यों की प्राप्त उपलब्धि के स्तर को मापने के लिए भी सहायक होगी।

© NCERT not to be republished

- विस्तारित संपर्क कार्यक्रम को आमने-सामने माध्यम (फेस-टू-फेस मोड) के अतिरिक्त, ऑनलाइन माध्यम जैसे मुक्त तथा मुफ्त ऑनलाइन कोर्सेस (MOOCs) के माध्यम से उपलब्ध करवाने का सुझाव भी कुछ प्रतिभागियों द्वारा दिया गया, जिससे अगर कोई प्रतिभागी निर्धारित समय पर ई.सी.पी. का घटक किसी कारणवश पूरा नहीं कर पाए तो उसके पास ऑनलाइन माध्यम से उसे परिपूर्ण करने का अवसर हो।
- आयोजन पक्ष के संदर्भ में कुछ प्रतिभागियों ने आयोजकों द्वारा उपलब्ध करवाए गए जलपान व अल्पाहार को पर्याप्त नहीं माना। उनके अनुसार ई.सी.पी. के सत्र सुबह 10 बजे से साँय 5 बजे तक चलते हैं, इसलिए आयोजकों को दोपहर के भोजन की व्यवस्था भी करनी चाहिए। हालाँकि, आयोजकों द्वारा स्पष्ट रूप से ई.सी.पी के प्रारंभ होने से पहले ही, सीमित वित्तीय संसाधनों के चलते, प्रतिभागियों को अपने दोपहर के भोजन आदि की व्यवस्था स्वयं करने को बता दिया जाता था।

निष्कर्ष

विद्यालय नेतृत्व और प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (पी.जी.डी.एस.एल.एम.) के विस्तारित संपर्क कार्यक्रम के चारों समूहों के अधिकांश प्रतिभागियों ने ई.सी.पी. को विभिन्न अपेक्षित क्षमताओं, कौशल तथा मूल्यों के विकास के लिए बहुत उपयोगी माना। अधिकतर प्रतिभागियों ने कक्षा-कक्ष केंद्रित प्रकरणों, जैसे—शिक्षा प्रौद्योगिकी, मूल्यांकन, शिक्षण विधियाँ इत्यादि को प्रबंधन-संबंधी प्रकरणों, जैसे—अनुदेशात्मक नेतृत्व, अंतर्वैयक्तिक संबंध, बजट निर्माण, वित्तीय कार्यनीतियाँ आदि की तुलना में अधिक उपयोगी माना। अधिकतर प्रतिभागी ई.सी.पी. के विभिन्न शैक्षिक पहलुओं, जैसे—प्रकरण के चयन, संसाधन व्यक्ति की कुशलता, शिक्षण विधि तथा प्रौद्योगिकी के प्रयोग से संतुष्ट पाए गए। यद्यपि अधिकांश प्रतिभागियों के अनुसार इग्नू के संसाधन व्यक्तियों द्वारा लिए गए सत्र अधिक उपयोगी थे। इसके अतिरिक्त, सत्रों में लोकतांत्रिक वातावरण होने के कारण, प्रतिभागियों का आपस में तथा संसाधन व्यक्तियों के साथ अंतर्वैयक्तिक संबंधों का स्तर काफ़ी उच्च पाया गया। हालाँकि, जहाँ तक आयोजन पक्ष का प्रश्न है, क्षेत्रीय केंद्र दिल्ली-1 के सीमित सुविधाओं वाले परिसर में आयोजित ई.सी.पी. के प्रथम दो समूहों (2015 तथा 2016) के प्रतिभागियों की तुलना में, इग्नू मुख्यालय के वातानुकूलित कक्ष में आयोजित ई.सी.पी. के अंतिम दो समूहों (2017 तथा 2018) के प्रतिभागियों ने सुखद परिवेश का अनुभव किया, जिससे उनके मतानुसार उन्हें अकादमिक पक्ष में भी सहायता मिली।

शैक्षिक निहितार्थ

इस शोध के शैक्षिक निहितार्थ निम्नलिखित हैं—

- शिक्षा की गुणवत्ता में समग्र सुधार हेतु विद्यालय नेतृत्व और प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (पी.जी.डी.एस.एल.एम.) के विस्तारित संपर्क कार्यक्रम (ई.सी.पी.) की उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए इसे शिक्षकों के लिए अनिवार्य बनाया जा सकता है, जिसे पूरा करने के पश्चात् उन्हें पदोन्नति या वेतन वृद्धि की सुविधा दी जा सकती है।

© NCERT not to be republished

- ई.सी.पी. को और भी अधिक प्रभावी बनाने के लिए इग्नू द्वारा शोध-आधारित विषय/प्रकरण चयन तथा देश के संसाधन व्यक्तियों को प्रशिक्षित करने हेतु नीति बनाई जा सकती है।
- ई.सी.पी. की अवधि बढ़ाकर छह दिन की जा सकती है।
- ई.सी.पी. का आयोजन प्रतिवर्ष दो बार किया जा सकता है।
- ई.सी.पी.को क्रेडिट युक्त घटक बनाकर इसमें मूल्यांकन पक्ष भी जोड़ना चाहिए।
- ई.सी.पी. को आमने-सामने माध्यम के अतिरिक्त, ऑनलाइन माध्यम, जैसे — मुक्त तथा मुफ़्त ऑनलाइन कोर्सेस (MOOCs) के माध्यम से उपलब्ध करवाना चाहिए।

भावी शोध अध्ययन के लिए सुझाव — चूँकि इस शोध में केवल क्षेत्रीय केंद्र दिल्ली-1 द्वारा 2015, 2016, 2017 तथा 2018 में आयोजित ई.सी.पी. को आधार बनाया गया, इसके निष्कर्ष के सामान्यीकरण के लिए, इसे एक बड़े न्यादर्श पर दोहराने की आवश्यकता है। साथ ही इसके विभिन्न आयामों में पारस्परिक संबंधों को जानने के लिए, विभिन्न संख्यात्मक सांख्यिकी प्रविधियों का प्रयोग भी किया जा सकता है।

संदर्भ

कुमार, ब्रजेश, पी. के. साहू. 2018. शिक्षक-प्रशिक्षकों के वृत्तिक विकास हेतु सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकता का अध्ययन. *भारतीय आधुनिक शिक्षा.* वर्ष 39, अंक 1, पृ. 115 – 127. रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.

चमोला, उमेश. 2018. अध्यापक शिक्षा एवं अध्यापकों का निरंतर पेशेवर विकास. *भारतीय आधुनिक शिक्षा.* वर्ष 38, अंक 4, पृ. 81–92. रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.

मानव संसाधन विकास मंत्रालय. 1986. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986.* भारत सरकार, नयी दिल्ली.

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद्. 2009. *अध्यापक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2009.* राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद्, नयी दिल्ली.

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. 2006. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.

लोढ़ा, जीतेन्द्र कुमार. 2018. शिक्षकों में पेशेवर चेतना — एक महती ज़रूरत. *भारतीय आधुनिक शिक्षा.* वर्ष 38, अंक 4, पृ. 93–103. रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.

© NCERT not to be republished